JAIN VISHVA BHARATI INSTITUTE, LADNUN

(DEEMED UNIVERSITY)

RESEARCH ELIGIBILITY TEST (RET) - 2018

PAPER – II (CONCERN SUBJECT)

PRAKRIT

DATE OF EXAMINATION : AUGUST 02, 2018

ROLL NO. : **SIG. OF INVIGILATOR**

TIME : 01.30 HOURS **MARKS : 50 X 3 = 150**

NOTE :

1. All questions are compulsory and of objective type. / सभी प्रश्न अनिवार्य एवं वस्तुनिष्ठ हैं।
2. All questions carry equal marks. / सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।
3. Only one answer is to be given for each question. / प्रत्येक प्रश्न का एक ही उत्तर देना है।
4. If more than one answer is marked, it would be treated as wrong answer. / एक से अधिक उत्तर देने की दशा में प्रश्न के उत्तर को गलत माना जायेगा।

1. प्राकृत में स्वरवर्ण की संख्या है –

   (अ) 12 (ब) 10

   (स) 08 (द) 06

   ( )

2. प्राकृत में ऋ का परिवर्तन इस रूप में होता है –

   (अ) र (ब) ऊ

   (स) अ (द) ऐ

   ( )

3. श्वेताम्बर आगमों की भाषा यह है –

   (अ) शौरसेनी (ब) मागधी

   (स) अर्धमागधी (द) महाराष्ट्री

   ( )

4. प्राकृत–प्रकाश के रचनाकार हैं –

   (अ) पाणिनि (ब) हेमचन्द्र

   (स) महाप्रज्ञ (द) वररूचि

   ( )

5. अशोक के अभिलेखीय प्राकृत का समय है –

   (अ) ईसा पूर्व पंचम शताब्दी (ब) ईसा पूर्व तृतीय शताब्दी

   (स) ईस्वी तृतीय शताब्दी (द) ईस्वी सप्तम शताब्दी

   ( )

6. प्राकृत–कोष ग्रन्थ है –

(अ) कविदर्पण (ब) प्राकृत पैङ्गलम

(स) प्राकृत–सर्वस्व (द) देशीनाममाला

( )

7. आदि स्वरागम का उदाहरण है –

(अ) सरिआ (ब) इत्थी

(स) होइ (द) थाणुअ

( )

8. प्राकृत और आधुनिक भारतीय आर्य भाषाको जोड़ने वाली कड़ी यह है –

(अ) अपभ्रंश (ब) वैदिक

(स) पालि (द) संस्कृत

( )

9. मागधी प्राकृत में श, ष, और स के स्थान पर यह होता है –

(अ) स (ब) ष

(स) श (द) य

( )

10. सेतुबन्ध महाकाव्य की भाषा यह है –

(अ) महाराष्ट्री (ब) शौरसेनी

(स) पैशाची (द) अपभ्रंश

( )

11. प्राकृत में ये स्वर–वर्ण नहीं पाये जाते –

(अ) अ, इ (ब) अ, उ

(स) ऋ, ऐ (द) आ, ई

( )

12. उत्तराध्ययन सूत्र में है –

(अ) अध्ययन (ब) सर्ग

(स) अंक (द) संधि

( )

13. 'कर्पूरमञ्जरी सट्टक में प्रयुक्त भाषा यह है–

(अ) पैशाची (ब) शौरसेनी

(स) अर्धमागधी (द) संस्कृत

( )

14. शूद्रक इस ग्रन्थ की रचयिता हैं –

(अ) मृच्छकटिकम् (ब) शाकुन्तलम्

(स) मुद्राराक्षम् (द) अश्रुवीणा

( )

15. प्रवचनसार के रचयिता हैं –

(अ) आचार्य भद्रबाहु (ब) आचार्य कुन्दकुन्द

(स) शिवार्य (द) आचार्य तुलसी

( )

16. द्रव्यसंग्रह इस भाषा का ग्रन्थ है –

(अ) संस्कृत (ब) मागधी

(स) शौरसेनी (द) अपभ्रंश

( )

17. आचाराङ्ग सूत्र है –

(अ) अङ्ग सूत्र (ब) मूलसूत्र

(स) छेदसूत्र (द) उपाङ्ग सूत्र

( )

18. अरण्यम् शब्द का प्राकृत रूप यह है –

(अ) रण्णं (ब) वण्णं

(स) पण्णं (द) जलं

( )

19. प्राकृत भाषा का इस भाषा–समुदाय से सम्बन्ध है –

(अ) द्राविडियन् (ब) सेमेटिक्

(स) हेमेटिक् (द) इण्डो–आर्यन्

( )

20. प्राकृत में द्विवचन के स्थान पर यह होता है –

(अ) द्विवचन (ब) बहुवचन

(स) लोप (द) एकवचन

( )

21. सारसः शब्द का मागधी रूप यह है –

(अ) सारसो (ब) सालशो

(स) शालशे (द) शारशे

( )

22. अर्धमागधी आगमों की प्रथम वाचना यहां हुई थी –

(अ) वल्लभी (ब) पाटलिपुत्र

(स) वाराणसी (द) मथुरा

( )

23. भगवान महावीर की उपदेशों की भाषा यह है –

(अ) महाराष्ट्री (ब) शौरसेनी

(स) अर्धमागधी (द) आवन्ती

( )

24. यह हरिभद्रसूरि का ग्रन्थ है –

(अ) समराइच्चकहा (ब) कंसवहो

(स) उषाणिरूद्ध (द) सेतुबन्ध

( )

25. आचार्य हेमचन्द्र इस ग्रन्थ के लेखक हैं –

(अ) देशिनाममाला (ब) शब्देन्दुशेखर

(स) अमरकोष (द) शब्दकल्पद्रुम

( )

26. प्राकृत में पदान्त –म्– के स्थान पर होता है –

(अ) अनुस्वार (ब) हलन्त

(स) विसर्ग (द) दीर्घ

( )

27. गुणाढय की वड्डकहा इस प्राकृत में लिखित है –

(अ) महाराष्ट्री (ब) अर्धमागधी

(स) शौरसेनी (द) पैशाची

( )

28. णायकुमारचरिउ की भाषा है –

(अ) पैशाची (ब) अपभ्रंश

(स) अर्धमागधी (द) मागधी

( )

29. गाहासत्तसई के लेखक हैं –

(अ) वाक्पतिराज (ब) राजशेखर

(स) उद्द्योतनसूरि (द) हाल

( )

30. यह प्राकृत का द्व्याश्रय काव्य है –

(अ) प्रवचनसार (ब) कुमारपालचरित

(स) विक्रमोर्वशीय (द) उषाणिरूद्ध

( )

31. प्राकृत के कथाग्रन्थ है –

(अ) मूलाचार (ब) समयसार

(स) धम्मरसायण (द) वसुदेवहिण्डी

( )

32. कविदर्पण का मुख्य विषय है –

(अ) कोष (ब) छन्द

(स) अलङ्कार (द) व्याकरण

( )

33. वृत्तजातिसमुच्चय के कर्ता का नाम है –

(अ) वररूचि (ब) पिङ्गल

(स) भोज (द) विरहांक

( )

34. कुमारपालचरित ग्रन्थ में नायक है –

(अ) सातवाहन (ब) कुमारपाल

(स) चन्द्रगुप्त (द) समुद्रगुप्त

( )

35. यह खण्डकाव्य है –

(अ) गाहासत्तसई (ब) वज्जालग्ग

(स) कर्पूरमञ्जरी (द) कंसवहो

( )

36. आनन्दसुन्दरी सट्टक के लेखक हैं –

(अ) घनश्याम (ब) राजशेखर

(स) रामपाणिवाद (द) हस्तिमल्ल

( )

37. संस्कृत नाटकों में यह पात्र शौरसेनी प्राकृत बोलता है –

(अ) राजा (ब) धीवर

(स) विदूषक (द) ऋषि

( )

38. शाकारी प्राकृत इस ग्रन्थ में प्रयुक्त हुई है –

(अ) अभिज्ञानशाकुन्तलम् (ब) मृच्छकटिकम्

(स) मुद्राराक्षसम् (द) लीलावईकहा

( )

39. प्राकृत में अ–कारान्त शब्द का प्रथमा एकवचन में यह रूप होता है –

(अ) आ (ब) उ

(स) ओ (द) ई

( )

40. यह प्राकृत छन्द नहीं है –

(अ) गाहा (ब) पज्झटिका

(स) विग्गाहा (द) जगती

( )

41. प्राकृत में एक पद में सन्धि होने का उदाहरण है –

(अ) काही (ब) जोइंदु

(स) राउलं (द) राअइ

( )

42. प्राकृत में स्वर–मध्यवर्ती –ठ– का परिवर्तन इस प्रकार होता है –

(अ) थ (ब) ठ

(स) ढ (द) प

( )

43. यह मूर्धन्यीकरण का उदाहरण है –

(अ) सरलं (ब) करणिज्जं

(स) णडो (द) वट्टइ

( )

44. इस आगम को लुप्त माना जाता है –

(अ) औपपातिक सूत्र (ब) कल्पसूत्र

(स) व्याख्याप्रज्ञप्ति (द) दृष्टिवाद

( )

45. श्वेताम्बर परम्परा के अनुसार सबसे प्राचीन आगम यह है –

(अ) कल्पावतंसिका (ब) आचारांग

(स) ज्ञाताधर्मकथा (द) दशवैकालिक

( )

46. नेमिचन्द्रसूरि की रचना का नाम है –

(अ) आख्यानमणिकोष (ब) वसुदेवहिण्डी

(स) धूर्ताख्यान (द) तरंगवती

( )

47. उवासगदसाओ में अध्ययनों की संख्या है –

(अ) 27 (ब) 10

(स) 16 (द) 12

( )

48. देशीनाममाला इस नाम से भी जाना जाता है –

(अ) पाइयलच्छीनाममाला (ब) कविदर्पण

(स) रयणावली (द) प्राकृत–पैङ्गलम्

( )

49. यह स्वरभक्ति का उदाहरण है –

(अ) पोम्मं (ब) भारिया

(स) लया (द) पडिपुण्णं

( )

50. लोकविजय – अध्ययन इस ग्रन्थ में उपलब्ध है –

(अ) स्थानांगसूत्र (ब) विपाकसूत्र

(स) आचारांगसूत्र (द) भगवतीसूत्र

( )

●●●